सूरः वाक़िआ की फ़ज़ीलत

हज़रत इमाम मुहम्मद बाकर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शब सूरः वाक़िआ को सोने से पहले पढ़ेगा तो जिस वक़्त वह हक़ तआला की बारगाह में हाजिर होगा, उसका चेहरा चौधवीं के चांद की तरह चमकेगा और इमाम जाफ़र सादिक अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जो शख़्स हर शबे जुमा को यह सूरः पढ़े तो खुदा तआला उसको अपना दोस्त गरदानेगा और तमाम लोगों के दिलों में उसकी दोस्ती डाल देगा वह फ़क़ीरी नहीं देखेगा और न मुहताज होगा, नीज़ दुनिया की आफ़तों और बलाओं से महफ़ूज रहेगा और हज़रत अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम के रूफ़क़ा में शुमार होगा। मंकूल है कि उसमान बिन अफ्फान जब अब्दुल्लाह इब्न मसूद की अयादत को गये तो उस्मान ने उनसे पूछा कि तुम्हें किस चीज़ की शिकायत है? कहा अपने गुनाहों की! फिर पूछा कि किया आर्ज़ू रखते हो? कहा रहमते परवरदिगार की, बाद इसके दरयाफ़्त किया कि तबीब को बुलाऊं कि तुम्हारा इलाज करे? कहा तबीब ही ने मुझ को बीमार कर डाला है! पूछा कुछ तुम्हारी माली एआनत करूं? कहा जब मैं मुहताज था उस वक्त तो तुम ने मेरी कुमुक की नहीं और अब जो मुझे एहतियाज नहीं तू मुझको देना चाहते

सूरः वाक़िआ

हो, उस्मान ने कहा तुम्हारे बेटों को कुछ दे दूं? कहा उनको भी जरूरत नहीं है इस वास्ते कि उनको सूरः वाकिआ तालीम किया है और वह हनेशा इसकी तिलावत करते हैं और मैंने जनाबे रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम से सुना है कि जो शख़्स हर शब इस सूरः को पढ़े वह हर्गिज फकीर व मुहताज न होगा। खुदावन्द आलम उसे वुस्अते रिज़्क अता फ़रमायेगा।

सूरः वाक़िआ शबे शंबा शुरू करना चाहिए और हर शब को तीन मतर्बा इस सूरः की तिलावत की जाये और शबे जुमा ८ या ५ मतर्बा पढ़ा जाये।नीज सुरः शुरू करने से पहले यह दुआ पढ़े।

अल्लाहुम्मरजुक़्नी रिज़्कन वासिअ़न हलालन तय्यिबन मिन ग़ैरि कदिदन वस्तजिब दअ़वती मिन ग़ैरि रदिदन व अअ़ूज़ुबि–क मिन फ़ज़ी–ह–तिल फक्रि वद्दैनि वद्फा अ़न्नी हाजैनि बि हक़्क़िल इमामैनिस्सिब्तैनिल हसनि वल हुसैन।

सूरः वाक़िआ

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

इबतिदा अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम करने वाला है।

इज़ा व-क़-अ़तिल वाक़िअह०

जब क़यामत बरपा होगी, (और) उसके वाक़े

लै-स लिवक़्अ़तिहा काज़िबह०
होने में जरा झूठ नहीं, (उस वक्त लोगों में
ख़ाफ़िज़तुर राफ़िअ़ह० इज़ा
फ़र्क़ ज़ाहिर होगा कि) किसी को पस्त
रुज्जतिल अर्ज़ु रज्जा० व
करेगी किसी को बुलन्द जब जमीन बड़े
बुस्सतिल जिबालु बस्सा०
जोरों से हिलने लगेगी, और पहाड़ टकरा
फ़-कानत हबाअम्मुंब्बस्सा०
कर बिल्कुल चूर चूर हो जायेंगे, फिर ज़र्रे
व कुंतुम अज़्वाजन सलासह०
बन कर उड़ने लगेंगे और तुम लोग तीन
फ़ अस्हाबुल मैम-न-ति मा
क़िस्म हो जाओगे, तो दाहिने हाथ (में
अस्हाबुल मै-म-नह० व अस्हाबुल
आमाल लेने) वाले (वाह) दाहिने हाथ में
मश-अ-मति मा अस्हाबुल मश-
क्या (चैन में) हैं, और बायें हाथ (में नामा
अ-मह० वस्साबिकू
आमाल लेने) वाले (अफ़्सोस) बायें हाथ

सूरः वाक़िआ

नस्साबिकून० ऊलाइकल
वाले क्या (मुसीबत में) और जो आगे बढ़
मुक़र्रबून० फ़ी जन्नातिन नअ़ीम०
जाने वाले हैं (वाह क्या कहना) वह आगे ही
सुल्लतुम मि-नल अव्वलीन०
बढ़ने वाले थे यही लोग (ख़ुदा के) मुक़र्रब
व क़लीलुम मि-नल आख़िर-
हैं आराम व आसाइश के बाग़ों में बहुत से
रीन० अ़ला सुरुरिम
तो अगले लोगों में होंगे और कुछ थोड़े से
मौज़ूनतिम मुत्तकिई-न
पिछले लोगों में से, मोती और याक़ूत से
अ़लैहा मु-त-क़ा बिलीन०
जड़े हुए सोने के तारों से बुने हुए तख़्तों
यतूफ़ु अ़लैहिम विल्दानुम
पर एक दूसरे के सामने तकिये लगाये (बैठे)
मुख़ल्लदून० बि अक्वाबिंव व
होंगे नौजवान लड़के जो (बहिश्त में) हमेशा
अबारीक० व कअ़सिम मिम
(लड़के ही बने) रहेंगे, (शरबत वग़ैरह के)

सूरः वाक़िआ

सलामन सलामा० व अस्हा
तो बेहूदा बात सुनेंगे और न गुनाह की बात
बुल यमीन० मा अस्हाबुल
(फुहश) बस उनका कलाम सलाम ही
यमीन० फ़ी सिद्रिम्मख्जूद व
सलाम होगा, और दाहने हाथ वाले (वाह)
तल्हिम्मंजूद व ज़िल्लिम्मम्दूद व
दाहिने हाथ वालों का क्या कहना, बे काटे
माइम मस्कूब व फ़ाकि-हतिन
की बेरियों और लदे गठे हुए केलों, और
कसीरतिल्ला मक्तूअतिंव
लम्बी लम्बी छाओं और झरने के पानी और
वला मम्नूअ ह० व
अलग़ारों मेवों में होंगे जो कभी खत्म न
फ़ुरुशिम्मरफ़ूअ ह० इन्ना
होंगे और न उनकी कोई रोक टोक, और
अंशअनाहुन-न इंशाआ० फ़
ऊँचे ऊँचे (नर्म गर्भों के) फ़रिश्तों में (मजे
जअल्नाहुन-न अब्कारा०
करते) होंगे (उनको वह हूरें मिलेंगी) जिन

मअ़ीन० ला युसद्दअू-न अंहा
साग़र और चमकदार टोटी वाले कंटर
वला युन्ज़िफ़ून० व फ़ाकिहतिम
और शफ़्फ़ाफ़ शराब के जाम लिय हुए
मिम्मा य-त-ख़ैय्यरून० व
उनके पास चक्कर लगाते होंगे जिसके पीने
लह्मि तैरिम मिम्मा यश्त-हून०
से न तो उनको (खुमार से) दर्दे सर होगा,
व हुरुन अ़ीन० ०
और न वह बद हवास मदहोश होंगे और
क-अम्सालिल लुअ-लुइल
जिस क़िस्म के मेवे पसन्द करें और जिस
मक्नून० जज़ाअम बिमा
क़िस्म के परिन्दा को गोश्त उनका जी चाहे
कानू यअ़मलून० ला
(सब मौजूद हैं) और बड़ी बड़ी आंखों वाली
यस्मअू-न फ़ीहा लग़्वंवला
हूरें जैसे एहतियात से रखे हुए मोती, यह
तअसीमा० इल्ला क़ीलन
बदला है उन के नेक आमाल का, वहां न

अ़जीम० व कानू य-कूलून०
आयन्द, यह लोगा इससे पहले (दुनिया में)
अ-इज़ा मित्ना व कुन्ना
ख़ूब ऐश उड़ा चुके थे और बड़े गुनाह
तुराबन व अिजामन अ इन्ना
(शिर्क) पर अड़ते रहते थे, और कहा करते
ल मब्अूसून० अ व आबाउनल
थे कि भला जब हम मर जायेंगे और (सड़
अव्वलून० कुल इन्नल
गल कर) मिट्टी और हड्डियां (ही
अव्वली-न वल आख़िरीन०
हड्डियां रह जायेंगी तो क्या हमें या हमारे
ल-मजमूअू-न इला मीक़ाति
अगले बाप दादाओं को फिर उठना है (ए
यौम्मिअ़लूम० सुम-म इन-न-
रसूल) तुम कह दो कि अगले और पिछले
कुम अय्युहज़्ज़ाल्लूनल
सबके सब रोजे मुअय्यन की मीआद पर
मुकज़्ज़िबून० ल आकिलू-न
ज़रूर इकट्ठे किये जायेंगे, फिर तुम को

सूरः वाक़िआ

अुरुबन अत्राबा० लि अस्हा
को हमने नित नया पैदा किया है तो हमने
बिल यमीन० सुल्लतुम मि-नल
कुंवारियां प्यारी प्यारी हमजोलियां बनाया
अव्वलीन० व सुल्लतुम मिनल
(यह सब सामान) दाहिने हाथ (में नामा
आख़िरीन० व अस्हाबुश्शिमाल०
आमाल लेने) वालों के वास्ते है, (उनमें)
मा अस्हाबुश शिमाल० फ़ी
बहुत से तो अगले लोगों में से और बहुत से
समूमिवं व हमीम० व ज़िल्लिम
पिछले लोगों में से और बायें हाथ (में नामा
मिंय्यहमूम० ला बारिदिवं
आमाल लेने) वाले (अफ़सोस) बायें हाथ
वला करीम० इन्नहुम कानू
वाले क्या (मुसीबत) हैं (दोज़ख की) लूं और
क़ब-ल ज़ालि-क मुत्रफ़ीन० व
खोलते हुए पानी और काले स्याह धुऐं के
कानू युसिर्रू-न अला हिन्सिल
साये में होंगे जो न ठण्डा है और न खूश

मौ-त व मा नह्नु बि
(औरतों के) रेहम में डालते हो क्या तुम ने
मस्बूक़ीन० अ़ला अन
देख भाल लिया है? क्या तुम इससे आदमी
नुबद्दिद-ल अम्साल-कुम
बनाते हो? या हम बनाते हैं हमने तुम लोगों
वनुंशि-अ-कुम फ़ी मा ला
में मौत को मुक़र्रर कर दिया है और हम
तअ़लमून व ल-क़द
इससे आजिज़ नहीं हैं कि तुम्हारे ऐसे और
अलिम्तुमुन नश्अ़तल ऊला
लोग बदल डालें और तुम लोगों को इस
फ़लौ ला तज़क्करून० अ-फ़
(सूरत) में पैदा करें जिसे तुम मुत्लक़ नहीं
रऐतुम मा तहरुसून० अ
जानते, और तुमने पहली पैदाइश तो समझ
अंतुम तज़-र-अूनहु अम
ही ली है (कि हम ने की) फिर तुम ग़ौर
नह्नुज़्ज़ारिऊन लौ नशाउ ल
क्यों नहीं करते, भला देखो तो जो कुछ

सूरः वाक़िआ

मिन श-ज-रिम मिन ज़क़्क़ूम० फ़
बेशक ए गुमराहो झुठलाने वालो, यक़ीनन
मालिऊ-न मिन्हल बुतून० फ़
(जहन्नम में) थूहर के दरख़्तों में से खाना
शारिबू-न अलैहि मिनल
होगा तो तुम लोगों को इसी से (अपना) पेट
हमीम० फ़ शारिबू-न शुर्बल
भरना होगा इसके ऊपर खोलता हुवा पानी
हीम० हाज़ा नुज़ुलुहुम यौमद्दीन०
पीना होगा और पियोगे भी तो प्यासे ऊंट
नह्नु ख़लक़नाकुम फ़-लौला
का सा (डगडगा के) पीना क़यामत के दिन
तुसद्दिक़ून अ-फ़-र-ऐतुम मा
यही उनकी मेहमानी होगी तुम लोगों को
तुम्नून० अ अंतुम तख़्लुक़ून-हू
(पहली बार भी) हम ही ने पैदा किया है
अम नह्नुल ख़ालिक़ून०
फिर तुम लोग (दोबारा की) क्यों नहीं
नह्नु क़द्दर्ना बैन-कुमुल
तस्दीक़ करते तो जिस नुत्फ़ा को तुम

अंतुम अंशअतुम श-ज-र-तहा
तो क्या तुमने आग पर भी ग़ौर किया है?
अम नह्नुल मुंशिऊन।
जिसे तुम लकड़ी से निकालते हो, क्या
नह्नु ज-अल्नाहा तज़्कि-रतौं
उसके दरख़्त को तुमने पैदा किया है या
व मताअ़ल लिलमुक़्वीन० फ़
हम पैदा करते हैं? हम ने आग को (जहन्नम
सब्बिह बिस्मि रब्बिकल
को) याद देहानी और मुसाफ़िरों के नफ़ा के
अ़ज़ीम० फ़ला उक़्सिमु बि
वास्ते पैदा किया है, तो (ए रसूल) तुम
मवाक़िअ़िन्नुजूम व इन्नहु
अपने बुज़ुर्ग परवरदिगार की तस्बीह करो,
ल-क़-समुल्लौ तअ़ल-मू-न
तो मैं तारों की मनाज़िल की क़सम खाता
अज़ीम० इन्नहु ल क़ुरआनुन
हूं और अगर तुम समझो तो यह बड़ी क़सम
करीम० फ़ी किताबिम्मक्नून०
है, कि बेशक यह बड़े रुतबे का क़ुरान है,

सूरः वाक़िआ

ज-अल्नाहु हुतामन फ़
तुम लोग बोते हो, क्या तुम लोग उसे
ज़ल्तुम त-फ़क्क-हून इन्ना ल
उगाते हो या हम उगाते हैं? अगर हम
मुग़रमून बल नह्नु
चाहते तो उसे चूर चूर कर देते! तो तुम
महरूमून० अ-फ़ रऐतुमुल
बातें ही बनाते रह जाते कि (हाऐ) हम तो
मअ़ल-लज़ी तश्रबून० अ
(मुफ़्त) तावान में फंसे, नहीं हम तो बद
अंतुम अंज़ल्तुमूहु मिनल
नसीब ही हैं, तो क्या तुमने पानी पर भी
मुज़्नि अम नह्नुल मुज़िलून० लौ
नज़र डाली? जो दिन रात पीते हो क्या
नशाउ ज-अल्नाहु उजाजन
इसको बादल से तुमने बरसाया है? या हम
फ़लौ ला तश्कुरून० अ फ़
बरसाते हैं: अगर हम चाहें तो उसे खारी
रऐतुमुन्नारल्लती तूरून० अ
बना दें तो तुम लोग शुक्र क्यों नहीं करते?

ला यमस्सुहू इल्लल मुतह्हरून०
जो किताब (लौहे) महफूज में (लिखा हुआ)
तंज़ीलुम मिर रब्बिल
है, इसको तो बस वही लोग छूते हैं जो
आलमीन० अ-फ़-बिहाज़ल
पाक हैं, सारे जहां के परवरदिगार की तरफ़
हदीस अंतुम मुदहिनून० व
से (मुहम्मद) पर नाजिल हुआ है, तो क्या
तज़अलू-न रिज़्क़-कुम अन-न
तुम लोग इस कलाम से इंकार रखते हो,
कुम तुकज़्ज़िबून फलौ ला इज़ा
तुम ने अपनी रोजी या क़रार दे ली है कि
ब-ल-गतिल हुलकूम० व
(इसको) झुठलाते हो, तो क्या जब जान
अंतुम ही-न-इजिन तंजुरून०
गले तक आ पहुंचती है? और तमु उस
व नह्नु अक़र-बु इलैहि
वक़्त (की हालत) पड़े देखा करते हो, और
मिंकुम व ला किंल्ला
हम उस (मरने वाले) से तुमसे ज्यादा

सूरः वाक़िआ

तुब्सिरून फलौ ला इन कुंतुम
नजदीक होते हैं लेकिन तुमको दिखाई नहीं
गै-र मदीनीन० तरजिअूनहा
देता, तो अगर तुम किसी दे दबाव में नहीं
इन कुंतुम सादिक़ीन० फ
हो, और अगर (अपने दावे में) तुम सच्चे हो
अम्मा इन का-न मिनल
तो रूह को फिर क्यों नहीं देते? पस अगर
मुक़र्रबीन फ-रौहुन व रैहानुवं
वह मरने वाला ख़ुदा के मुक़र्रबीन से है, तो
व जन्नतु नईम० व अम्मा
इसके लिए आराम व आसाइश है और
इन कान मिन अस्हाबिल
ख़ूशबूदार फूल और निमत के बाग और
यमीन० फ सलामुल-ल-क
अगर वह दाहिने हाथ वालों में से है तो
मिन अस्हाबिल यमीन० व
(उससे कहा जायेगा), तुम पर दाहिने हाथ
अम्मा इन का-न मिनल
वालों की तरफ से सलाम हो, और अगर

मुकज़्ज़िबीनज़्ज़ाल्लीन० फ़

झुठलाने वाले गुमराहों में से है, तो (उसकी)

नुज़ुलुम मिन हमीम० व

मेहमानी खोलता हुआ पानी है, और

तस्लियतु जहीम इन-न

जहन्नम में दाख़िल कर देना, बेशक यह

हाज़ा ल-हुव हक़्क़ुल यक़ीन

(ख़बर) यक़ीनन सहीह है, तो (ए रसूल) तुम

फ सब्बिह बिस्मि रब्बिकल

अपने परवरदिगार की तस्बीह करो।

अज़ीम०

☆☆☆☆☆☆☆

सूरः वाक़िआ